डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस–विज्ञप्ति

साहित्य अकादेमी द्वारा स्वतंत्रता दिवस पर 'भारत–स्वतंत्रता और उसके बाद' विषय पर परिसंवाद आयोजित

तथ्यों को केवल एक खास दृष्टिकोण की बजाय मानवीय मूल्यों के आधार पर देखना आवश्यक

वक्ताओं ने 'मानसिक आजादी' को भी जरूरी बताया

नई दिल्ली, 15 अगस्त 2019। साहित्य अकादेमी द्वारा 73वें स्वतंत्रता दिवस पर 'भारत–स्वतंत्रता और उसके बाद' विषयक परिसंवाद आयोजित किया गया। इस परिसंवाद में विभिन्न अनुशासनों और क्षेत्रों से जुड़े हुए महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम के वक्ता थे – वेद प्रताप वैदिक, शोवना नारायण, ज्ञानेश्वर मुळे, के. सच्चिदानंदन, प्रताप सोमवंशी, संजय कुमार, सईद अंसारी, सुधीर चंद्र, मृदुला गर्ग, पुरुषोत्तम अग्रवाल और नंदू राम।

कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव, के. श्रीनिवासराव ने सभी अतिथि विशेषज्ञों का अंगवस्त्रम् के साथ अभिनंदन किया तथा अपने स्वागत वक्तव्य में कार्यक्रम की परिकल्पना और उसके उद्देश्य पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि आजादी के साथ देश ने कई सपने देखे थे और आज 72 वर्ष बाद उनके विवेचन की जरूरत है।

सर्वप्रथम प्रख्यात कवि एवं प्रशासक ज्ञानेश्वर मुळे ने मानवाधिकार के क्षेत्र में देश की प्रगति के बारे में अपने विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने कहा कि मानवाधिकार हनन की ज्यादातर घटनाएँ दूसरों के प्रति हमारी असंवेदनशीलता के कारण होती हैं। भारत एक विविधतापूर्ण देश है और हमें इसकी इस विशिष्टता का सम्मान करना होगा, तभी इस तरह की अप्रिय घटनाओं पर रोक लग सकेगी।

प्रख्यात पत्रकार एवं चिंतक वेद प्रताप वैदिक ने कहा कि हमारा देश उपमहाद्वीप का एक बड़ा लोकतंत्र है और ये इसकी परिपक्वता के कारण ही संभव हुआ है। उन्होंने बौद्धिक और सांस्कृतिक आजादी को भी आवश्यक बताते हुए कहा कि परतंत्रता के कई सूक्ष्म रूप भी होते हैं, हमारा ध्यान उनकी तरफ भी जाना चाहिए।

प्रख्यात नृत्यांगना एवं विदुषी शोवना नारायण ने कलाओं के क्षेत्र में नवीन परिकल्पनाओं और उन्हें सामाजिक मुद्दों से जोड़ने की पहल को रेखांकित किया। आगे उन्होंने कहा कि आज हमारी कलाएँ प्राचीनता का दायरा तोड़कर नए सामाजिक संदर्भों की व्याख्याएँ प्रस्तुत कर रही हैं। उन्होंने इस बात पर खुशी व्यक्त की कि भारतीय कलाओं ने अपनी शास्त्रीय परंपरा पर पाश्चात्य मूल्यों को स्वयं पर हावी नहीं होने दिया है।

प्रख्यात मलयाली कवि के. सच्चिदानंदन ने भारत की विभिन्न भाषाओं के कवियों का उल्लेख करते हुए बताया कि हर दौर की कविता ने हमारी कमियों पर लगातार नजर रखी है और

जारी...

रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001, दूरभाष : +91-11-2338 7064, 2307 3002, फैक्स : +91-11-2338 2428
Rabindra Bhavan, 35 Ferozeshah Road, New Delhi-110 001, Phone : +91-11-2338 7064, 2307 3002, Fax : +91-11-2338 2428
E-Mail : secretary@sahitya-akademi.gov.in, Website : http//www.sahitya-akademi.gov.in

उसे सार्थक विश्लेषण के साथ प्रस्तुत किया है। यही कारण था कि कविता पहली बार संवाद के स्वर में परिवर्तित हुई। उन्होंने यह भी कहा कि साहित्य के व्यापक और बहुपक्षधर दृष्टिकोण ने सबाल्टर्न विमर्शों और अस्मिताओं को केंद्र में ला दिया।

प्रख्यात पत्रकार एवं एंकर सईद अंसारी ने कहा कि हमें अपने दृष्टिकोण को सही प्रकार से समझने और परखने की जरूरत है, जिसके सहारे ही हम अपने देश के प्रति हमारे क्या कर्तव्य हैं, उनको परिभाषित कर सकेंगे। उन्होंने युवाओं को आगे बढ़ने और बढ़ाने की आवश्यकता पर भी बल दिया।

प्रख्यात पत्रकार एवं कवि प्रताप सोमवंशी ने उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जिले के 'चिलका टाउन' का उदाहरण देते हुए विस्थापितों की कठिन स्थितियों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमें अपने तथाकथित विकास के मॉडल पर पुनर्विचार की जरूरत है। आगे उन्होंने कहा कि हमारा लोकतंत्र हाशिये के लोगों को अपने साथ लिए बिना अधूरा रह जाएगा।

प्रख्यात चुनाव विश्लेषक संजय कुमार ने अब तक के चुनावों के विश्लेषण के आधार पर कहा कि इनमें प्रत्येक नागरिक की भागीदारी लगातार बढ़ी है, चाहे वे राजनीतिक दल हों, प्रत्याशी हों, युवा हों या महिलाएँ, और यह एक स्वस्थ लोकतंत्र की पहचान है।

प्रख्यात लेखिका मृदुला गर्ग ने कहा कि 'आजादी' उनके लिए एक उत्साहजनक शब्द था लेकिन पिछले कुछ वर्षों की अप्रिय घटनाओं से लगता है कि यह देश अब भी मानसिक गुलामी से आजाद नहीं हुआ है। जब तक हम अपनी मानसिक जकड़न और संकीर्णता से नहीं निकलेंगे तब तक आजादी के सही मायने हम प्राप्त नहीं कर पाएँगे।

प्रसिद्ध इतिहासकार सुधीर चंद्र ने कहा कि ज्ञान में तर्क का बहुत थोड़ा योगदान होता है, लेकिन तथ्यों को केवल एक खास दृष्टिकोण की बजाय मानवीय मूल्यों के आधार पर देखना चाहिए। उन्होंने शिक्षा और स्वास्थ्य के महंगे होते जाने और पत्रकारिता के गिरते स्तर पर गहरी चिंता व्यक्त की।

प्रख्यात हिंदी लेखक एवं आलोचक पुरुषोत्तम अग्रवाल ने लोगों द्वारा भाषा के दुरुपयोग किए जाने पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि लोग इस तरह भी अप्रत्यक्ष रूप से हिंसा कर रहे हैं। उन्होंने आगे कहा कि आज हम जो नारे लगा रहे हैं क्या उनका सही अर्थ और महत्त्व भी समझ पा रहे हैं।

अंत में, प्रख्यात समाजशास्त्री एवं विद्वान नंदू राम ने कहा कि राजनीतिक आजादी तो हमने 1947 में प्राप्त कर ली थी जो केवल सत्ता का हस्तांतरण थी लेकिन हमने अब भी गरीबों और पिछड़ों को उनकी आजादी नहीं दी है। सामाजिक एवं धार्मिक असमानता की गहरी खाई आज भी हमारे सामने है, जिसे पाटना बेहद आवश्यक है।

कार्यक्रम के अंत में अकादेमी के सचिव, के. श्रीनिवासराव ने सभी सम्मानित वक्ताओं के प्रति आभार प्रकट किया। कार्यक्रम का संचालन साहित्य अकादेमी के संपादक अनुपम तिवारी ने किया। कार्यक्रम में भारी संख्या में लेखक, पत्रकार, विद्यार्थी एवं साहित्यप्रेमी उपस्थित थे।

श्रीनिवासराव

(के. श्रीनिवासराव)